नाम - डा. प्रदीप कुमार राय
विषय - राजनीति शास्त्र
वर्ग - बी. ए. पार्ट - 2, सत्र 2019-20
पेपर - 04 (3)
अध्याय - 17
नाम - डा. प्रदीप कुमार राय
एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग
रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम।
दिनांक - 14.05.2020

टॉपिक - भारतीय विदेशनीति के मूल तत्व या सिद्धांत अथवा विशेषतायें (शेष भाग)

(5.) साधनों की पवित्रता की नीति (Policy of Peaceful Means) — भारत ने अपने विदेशनीति में साधनों की पवित्रता को अपनाया है न कि अनैतिकता और अवसरवादिता को। इसमें शांतिपूर्ण और सत्य, अहिंसा को प्रश्रय दिया गया है। भारतीय संविधान में भी इस बात का उल्लेख है कि राज्य अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा, राष्ट्रों के बीच न्यायपूर्ण और सम्मानपूर्ण संबंध, अंतर्राष्ट्रीय विधि एवं संधियों के प्रति आदर एवं मध्यस्था द्वारा विवादों के निपटारे के प्रोत्साहन से संबंधित कार्य करेगा। ताशकंद समझौता, शिमला समझौता, लाहौर बस यात्रा, आदि अनेक उदाहरण इससे संबंधित हैं।

(6.) पंचशील पर जोर देने की नीति (Policy to Adhere Panchsheela) — पाँच सिद्धांतों पर आधारित पंचशील सिद्धांत भारत की विदेश नीति को नई दिशा दी है। इसका प्रतिपादन 1954 में भारत और चीन के बीच हुये समझौते के बाद किया गया। इसमें एक दूसरे, एक दूसरे के प्रादेशिक अखंडता एवं संप्रभुता का

पारस्परिक सम्मान की भावना, अनाक्रमण, तृतीय
तृतीय, एक दूसरे के आंतरिक मामलों में अहस्तक्षेप
चतुर्थ, समानता एवं पारस्परिक लाभ तथा
पंचम शांतिपूर्ण सह अस्तित्व।

पंचशील सिद्धांत को 1955 के बांडुंग सम्मेलन एवं 1959 के UNO की महासभा में भी स्वीकार किया गया। 1962 में भारत पर चीनी आक्रमण से इसकी वास्तविकता शांति में बदल गई।

(7.) साम्राज्यवाद और प्रजातीय विभेद का विरोध (Policy to oppose Imperialism and Racialism) — साम्राज्यवाद का भुक्तभोगी होने के कारण भारत इन दोनों का विरोधी है। यही कारण है कि भारत अंतरराष्ट्रीय स्वतंत्रता का सदैव समर्थन किया गया है। इंडोनेशिया पर हॉलैंड प्रकरण, मिस्र पर फ्रांस और इंग्लैंड का आक्रमण, अफ्रीकी देशों भाग में स्वतंत्रता संघर्ष, पश्चिम एशिया में डॉलर साम्राज्यवाद, हिंद चीन सैनिक गुट, रोडेशिया में प्रजातीय विभेद आदि का भारत द्वारा विरोध होते आया है।

(8.) संयुक्त राष्ट्र संघ का समर्थन करने वाली नीति (Policy to support the United Nations) — भारत द्वारा UNO के आदर्शों, उद्देश्यों एवं सिद्धांतों के प्रति समर्पण करते हुए सदैव इस दिशा में सक्रियता प्रदर्शित की जा रही है। विभिन्न अंगों, प्रसंगों, घटनाओं, अवसरों, संकटों में भारत का यह समर्पण और सहयोग देखा जा सकता है। कोरिया, हिंद-चीन, कांगो, कंबोडिया, यूगोस्लाविया, सोमालिया, अंगोला, मोजांबिक,

स्वॉड, स्कूडान, महासभा की बैठक, सुरक्षा परिषद, विभिन्न आयोगों, एजेंसियों, सम्मेलनों में भारत की भागीदारी, सहयोग UNO के प्रति उसका सकारात्मक पक्ष दर्शाता है। पर्यावरण संकट, पृथ्वी सम्मिट, आतंकवाद जैसे विगत वर्षों के अभियान में भी भारत की सक्रियता रही है।

निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि भारत की विदेश नीति के उपरोक्त मूल तत्व स्वतंत्रता से अब तक भारत के सकारात्मक पक्ष को उजागर करते हैं और इसके प्रति प्रतिबद्धता विभिन्न सरकारों के कार्यकाल में बनी रही है। मोदी के शासनकाल से भी विश्व राजनीति पर भारत के व्यापक सोच, कार्य, व्यवहार भारतीय विदेशनीति को प्रदर्शित हो रहे हैं।

Scanned with CamScanner